B.A. Part- I

(*History*) PAPER –II[nd]

राजस्थान का इतिहास

प्र0 गुर्जर प्रतिहार कैन थे? प्रतिहार नागभट्ट - II की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए?

उ0 गुर्जर प्रतिहार कौन थे–विद्वानों में मतभेद

1. डॉ. गोपीनाथ शर्मा के अनुसार
2. पृथ्वी राज रासो के अनुसार
3. कर्नल टॉड के अनुसार
4. डॉ. स्मिथ के अनुसार
5. डॉ. भण्डाकर के अनुसार

नागभट्ट द्वितीय की उपलब्धियां

1. राष्ट्रकूटों से युद्ध –
2. कन्नौज विजय –
3. धर्मपाल से युद्ध में विजय –
4. मुसलमानों की पराजय–
5. नागभट्ट द्वितीय का साम्राज्य –विस्तार

नागभट्ट द्वितीय का मूल्यांकन

1. पराक्रमी शासक –
2. धर्मनिष्ठ शासक –
3. कवियों और विद्वानों का आश्रयदाता –
4. निपुण सेनानायक और पराक्रमी सैनिक–

निष्कर्ष

प्रश्न– राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोतों का संक्षेप में वर्णन कीजिए?

उ0. राजस्थान के इतिहास को जानने के प्रमुख स्त्रोतों को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जा सकता है –

I. पुरातात्वि स्त्रोत :–

1. शिलालेख –
2. मुद्राएं या सिक्के –
3. ताम्र पत्र –
4. दुर्ग –
5. राजप्रसाद एवं महल –
6. मन्दिर व मूर्तिकला
7. स्मारक
8. खुराई में प्राप्त अवशेष

II. ऐतिहासिक साहित्य

1. संस्कृत साहित्य
2. राजस्थानी साहित्य

ख्यात साहित्य

3. उर्दू व फारसी साहित्य
4. आधुनिक ऐतिहासिक ग्रन्थ एवं इतिहास

III. पुरालेखागारीय स्त्रोत्र

1. फारसी भाषा में लिखित फरमान
2. वकील –रिपोर्ट्स
3. बहियां

IV. साहित्यिक स्त्रोंतों में ख्यात –साहित्य

1. नैणसी री ख्यात
2. बांकीदास री ख्यात
3. दयालदास री ख्यात
4. मुण्डीयार री ख्यात

प्रश्न– राणा कुम्भा की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलबियां बताइये?

उ0. **कुम्भा की प्रारम्भिक कठिनायां और उनका निवारण**

1. चाचा व मेरा की समस्या
2. रणमल की समस्या –

कुम्भा की राजनीतिक उपलब्धियां

1. परिश्चमी प्रदेशों की विजय
2. बूंदी की विजय
3. मेरो का दमन
4. पूर्वी राजस्थान की विजय
5. डूंगरपुर पर विजय
6. मालवा दो संघर्ष – महमूद खिलजी से 1437 में

J.D.P.G. COLLEGE

7. मेवाड गुजरात सम्बन्ध सुल्तान कुतुबुद्दीन से
8. नागौर से विजय

कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियां

I. कला के क्षेत्र में उन्नति
   1. दुर्गो का निर्माण (कुम्भलगढ, चित्तौडगढ, अलचगढ)
   2. मन्दिरो का निर्माण
   3. राजप्रसाद
   4. जलाशय
   5. मूर्तिकला
   6. संगीतकला एवं चित्रकला

II. साहित्य के क्षेत्र में उन्नति

महाराणा कुम्भा का व्यक्तित्व व मूल्यांकन

1. साहसी यौद्धा
2. योग्य व सफल शासक
3. हिन्दू संस्कृति का उपासक
4. कला व साहित्य का संरक्षक
5. कुशल राजनीतिज्ञ

निष्कर्ष :–

प्रश्न– चौहान साम्राज्य के पतन के कारणों का पृथ्वीराज III के विशेष सन्दर्भ में आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए ?

उ0. **तराइना के द्वितीय युद्ध के कारण**

1. भारत की राजनीतिक स्थिति
2. दोनों पक्षों की महत्वांकक्षा
3. धार्मिक कहरता
4. मुहम्मद गौरी भारत में इस्लाम का प्रचार करना चाहता था
5. पृथ्वी राज द्वारा गौरी की अधीनता स्वीकार न करना
6. मुस्लिम साम्राज्य का विस्तार करना

तराइन के द्वितीय युद्ध के परिणाम

1. भारत में मुस्लिम राज्य की नीव पडना
2. उत्तरी भारत पर मुसलमानों का वर्चस्व
3. राजपूत शक्ति तथा हिन्दुओं का विनाश
4. इस्लाम धर्म का प्रचार व हिन्दू मन्दिरों का ध्वसं
5. जन–धन की भीषण हानि
6. 650 वर्षो तक का इस्लामी शासन रहा

पृथ्वीराज तृतीय की पराज्य के कारण

1. पृथ्वीराज तृतीय दो जुड़े व्यक्तिगत कारण
2. राजनैतिक व सैनिक कारण
3. सामाजिक कारण
4. धार्मिक कारण
5. अन्य कारण

प्रश्न– राजस्थान के धार्मिक आन्दोलन में मीरा व दादू का क्या योगदान था ?

उ0. **मीरा का प्रारम्भिक जीवन**

मीरा की कठिनाइयां

धार्मिक आन्दोलन में मीरा की भूमिका

1. मीरा की कृष्ण भक्ति भावना
2. मीरा की आध्यात्मिक यात्रा के सोपान
3. मीरा के धार्मिक– सामाजिक विचार
   (a) भक्ति–भावना से ओत–प्रात
   (b) सांसारिकता से मुक्ति व ईश्वर के प्रति समर्पण
   (c) साम्प्रदायिकता का विराध
   (d) सगुण भक्ति को महत्व
4. व्यक्तिगत स्वतत्रता को महत्व
5. मीरा बाई के प्रमुख ग्रन्थ
6. मीराबाई की भाषा व उनका प्रभाव

निष्कर्ष

<u>दादू का जीवन वृत</u>

राजस्थान के धार्मिक आन्दोलन में दादू का योगदान–

1. दादू के दार्शनिक विचार –
   (a) ब्रह्म
   (b) जीव
   (c) माया
   (d) सृष्टि
   (e) मोक्ष
   (f) गुरू का महत्व
2. दादू का साधना पक्ष
3. दादू का सामाजिक विचार
4. दादू की भाषा

दादू पंथ की प्रमुख शाखाएं

1. खालसा
2. नागा

J.D.P.G. COLLEGE

3. उत्तराढ़ी
4. विश्क्त
5. खाकी

निष्कर्ष

प्रश्न– सवाई जयसिंह और मराठों के सम्बन्धों की विवेचना कीजिए ?

उ0. **जीवन चरित्र एवं राजनीतिक उपलब्धियां**

1. सवाई जयसिंह का प्रारम्भिक जीवन
2. सवाई जयसिंह का राज्यारोहण
3. सवाई जयसिंह का दक्षिण के अभियान में भाग लेना
4. सवाई जयसिंह एवं उत्त्राधिकार का युद्ध (मुगलों में 1707 से)
5. सवाई जयसिंह एवं आमेर राज्य के अधिकार का विवाद
6. सवाई जयसिंह को आमेर का शासक नियुक्त करना
7. सवाइ जयसिंह एवं मुगल बादशाह फर्रूत्वाशियर
8. मालवा की प्रथम सूबेदारी
9. जाटों के विरूद्ध अभियान
10. सवाई जयसिंह और सैपदबन्धू
11. सैयद बन्धुओं का पतन
12. सवाई जयसिंह का जाटों के विरूद्ध पुनः अभियान
13. मराठों के प्रति सवाई जयसिंह की नीति
14. सवाई जयसिंह की मालवा में दूसरी सूबेदारी
15. सवाई जयसिह की मालवा में तीसरी सूबेदारी
16. सवाई जयसिंह द्वारा बूंदी पर प्रभुत्व स्थापित करना
17. हुरज सम्मेलन का आयोजन –17 जुलाई 1734
18. हुरज सम्मेल की असफलता
19. राजपूतों व मूगलों का मराठों के विरूद्ध संयुक्त अभियान
20. सवाई जयसिंह द्वारा मराठों से समझौता करने का प्रयास
21. बाजीराव-I का उत्तर भारत का आक्रमण
22. पेशवा से समझौता
23. सवाई जयसिंह व अभयसिंह में संघर्ष निष्कर्ष

प्रश्न– परिस्थितियों का वर्णन कीजिए जिनसे प्रभावित होकर राजस्थान में राजनीकि चेतना जागृत हुई ?

उ0. **राजस्थान में राजनीतिक जागृति या प्रजामण्डलों के गठन के कारण –**

1. कृषक आन्दोलन
2. मध्यम वर्ग की भूमिका
3. समाचार पत्रों की भूमिका
4. आर्य समाज आन्दोलन
5. प्रथम महायुद्ध का प्रभाव
6. राजस्थान का गौरवपूर्ण अतीत
7. पडौसी प्रान्तों का प्रभाव
8. क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रभाव –अर्जुनलाल सेठी, केसरी सिंह, बारहठ, राव गोपाल सिंह
9. स्वदेशी आन्दोलन
10. अंग्रेजी शिक्षा का प्रीााव
11. प्रवासी व्यापारी वर्ग का योगदान
12. ब्रिटिश सरकार की नीति से असन्तोष
13. क्रांतिकारी साहित्य का योगदान
14. विभिन्न संस्थाओं का योगदान
    (a) राजस्थान सेवा संघ
    (b) राजस्थान –मध्य भारत सभा
    (c) अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना
    (d) राजस्थान में देशी राज्य लोक परिषद

प्रश्न– 1818 में राजपूत राजाओं द्वारा अंग्रेजों के साथ की गई सन्धियों के कारणों व परिणामों की विवेचना कीजिए ?

उ0. **चार्ल्स मेटकॉफ द्वारा राजपूत–शासकों से संधिया करने का प्रयास –**

चार्ल्स मेटकॉफ द्वारा राजपूत –शासकों को सन्धि के लिए आमन्त्रित करना
राजपूत राज्यों द्वारा ब्रिटिश सन्धियों को स्वीकार करने के कारण

1. मराठों व पिण्डारियों का आतंक
2. राजस्थान में मराठों का प्रवेश –

3. सामन्तों की शक्ति को नियन्त्रित करना –
4. राजपूत राज्यों में गृह कलह का होना–
5. आर्थिक दुर्दशा
6. कम्पनी की सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करना –
7. राजस्थान के विभिन्न राज्यों की घटनाएं –
8. लार्ड हैस्टिंग्ज की साम्राज्यवादी नीति –
9. कम्पनी की हड़प नीति –
10. अंग्रेजी कम्पनी की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करना–

अंग्रेजों से संधियों के प्रभाव

1. देशी राजाओं की प्रभुसत्ता का अन्त –
2. ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना –
3. सैनिक शक्ति का पतन –
4. देशी राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप –
5. पोलिटिकल एजेण्टों द्वारा हस्तक्षेप –
6. सामन्तों के द्वारा विद्रोह–
7. आर्थिक प्रभाव –
8. सामन्तों के विशेषाधिकारों का अन्त
9. देशी राजाओं की शासन सम्बन्धी कार्यों के प्रति उदासीनता
10. देशी राज्यों को शक्ति एवं सुरक्षा प्राप्त होना
11. अंग्रेजों द्वारा सन्धियों का उल्लघंन

निष्कर्ष

प्रश्न– राजस्थान के एकीकरण के विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए ?

उ0. **राजस्थान के एकीकरण की अवस्थाये**

1. प्रथम चरण तथा मत्स्य संघ का निर्माण – 18 मार्च 1948
2. द्वितीय चरण : संयुक्त राजस्थान का निर्माण – 25 मार्च 1948
3. तीसरा चरण : उदयपुर का सम्मिलित होना – 18 अप्रैल 1948
4. चौथा चरण : वृहतर राजस्थान का निर्माण – 30 मार्च 1949
5. पांचवा चरण : मत्स्य संघ का विलय – 15 मई 1949 में
6. छठा चरण : सिरोही का विलय
7. सातवा चरण : अजमेर मेरवाडा का विलय – 1 नवम्बर 1956 को

निष्कर्ष

अतिलघुरात्मक प्रश्न –उत्तर –

1. राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1919 में की गई –स्थापना हरिभाई ककर ने की।
2. राजस्थान मध्य भारत सभा की स्थापना सेठ जमनलाल बजाज की अध्यक्षता में 1919 में की गई।
3. 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' का प्रथम अधिवेश 17–18 दिसम्बर, 1927 में बम्बई में हुआ – विजय सिंह पथिक को उपाध्यक्ष एवं रामनारायण चौधरी की प्रान्तीय सचिव बनाया।
4. मेवाड 'प्रजामण्डल' की प्रथम अधिवेश 25–26 नवम्बर, 1941 में उदयपुर में – माणिक्यालाक वर्मा की अध्यक्षा में हुआ। इस अधिवेश में आचार्य कृपलानी और श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित भी थी।
5. 31 दिसम्बर, 1945 से 1 जनवरी, 1946 को अखिल–भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद का –सातवाँ अधिवेश उदयपुर में बुलाया – जिसकी अध्यक्षता– जवाहरलाल नेहरू ने की। अतः 23 मई, 1947 को प्रताप जयन्ती पर मेवाड का संविधान लागू कर दिया जिसके संवैधानिक सलाहकार थे के.एम. मुन्शी।
6. 'मारवाड–हितकारिणी सभा' – की स्थापना, 1918 में चाँदमल –सुरणा ने की।
7. 'मारवाड सेवा–संघ' की स्थापना – 1920 में जय नारायण व्यास ने की।
8. मारवाड प्रजा मण्डल की स्थापना 1934 ई. में की गई – प्रथम अध्यक्ष–भँवरलाल सर्राफ थे।
9. मारवाड राज्य लोक –परिषद का अधिवेश 1928 में हुआ कस्तुरबा गांधी की अध्यक्षता में पुष्कर में आयोजित किया जाने का प्रस्ताव रखा किन्तु असफल रहा। अतः 1931 में पुष्कर में चाँकरण शारदा की अध्यक्षता में मारवाड़ राज लोक परिषद का अधिवेशन सम्पन्न हुआ।
10. मारवाड़ प्रजा –मण्डल का मंत्रिमण्डल 28 फरवरी, 1948 में बना जिसके नेतृत्वकर्ता

थे– जयनारायण व्यास और सलाहकार थे– वी. पी. मेनन

11. मारवाड की हितकारिणी सभा की ओर से दो पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई –1. मारवाड की अवस्था, 2. पोपा बाई की पोल, जिसमें मारवाड प्रशासन की कटु आलोचना की।
12. जयनारायण व्यास द्वारा समाचार पत्र– अखण्ड भारत, अखण्ड–राजस्थान, तरूण राजस्थान, राजस्थान हैराल्ड हैं।
13. प्रजामण्डल के समय प्रमुख समाचार पत्र अजमेर से –देश हितैषी, राजस्थान केसरी–विजयसिंह पथिक द्वारा, 1920 में नवीन राजस्थान –1922 में, राजस्थान सेवा संघ द्वारा–बिजोलिया, बैंगू के किसान आंदोलन से संबंधित
14. 1885 –राजपूताना गजट पटका सामचार पत्र
    1889 – में राजस्थान समाचार पत्र
    इसके अतिरिक्त –परोपकार, जगहित कारक, राजस्थान टाईम्स आदि।
    1932 के पश्चात् –प्रभात 1932, नवज्योति (1936), नवजीवन (1939), जयपुर समाचार (1935), लोकवाणी (1943), अलवर पत्रिका (1943)
    (a) जीवन कुटीर के गीत– पंडित हीरालाल शास्त्री
    (b) इण्डिया हाउस की स्थापना – श्यामजी कृष्ण वर्मा ने की।
    (c) चेतावणी का चुंगट्या – केसरी सिंह बारहठ द्वारा –1903 में
    (d) वीर सतसई –सूर्यमलल मिश्रण
    (e) वंश वास्कर –
    (f) वीर विनोद – श्यामल दास
    (g) पंछिड़ा – माणिक्य लाल वर्मा
    (h) प्रताप समाचार पत्र–विजय सिंह पथिक इस समाचार पत्र के सम्पादक –गणेश शंकर विद्यार्थी गणेश शकर विद्यार्थी ने विजयसिंह पथिक ने आंदोलन को सक्रिया बनाया।

सागरमल गोपा – सागरमल गोपा पहले व्यक्ति थे जिन्होने जैसलमेर की जनता के महारावल के निरंकुश एवं दमनकारी शासन के विरूद्ध जाग्रत किया। सागरमल गोपा ने 1940 के आस–पास ''जैसलमेर में गुण्डा राज'' नामक पुस्तक छपवाई।

मोतीलाल तेजावत – 1922 में मेवाड के भील नेता मोतीलाल तेजावत के नृतत्व में वहां के भील, ग्रासिया आदि ने भू–राजस्व, बेगार, लगान के विरूद्ध आन्दोलन चलाया। सिरोही नरेश जब अनुदार व निरंकुश, शासन चला रहा था। तब सिरोही जनता के जन आन्दोलन के नेता मोतीलाल तेजावत थे।

प्रजामण्डल –

1. कोटा– प्रजामंडल की स्थापना 1939 में नयनूराम शर्मा ने करी प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता नयनूराम ने की।
2. 'हाडौती' प्रजा मण्डल की स्थापना – 1931 में की गई पंडित नयनूराम शर्मा ने की।
3. भरतपुर – 1938 में भरतपुर प्रजा मण्डल की स्थापना अध्यक्षता एम.एन.राय ने की।
4. अलवर प्रजामण्डल – 1939 में हरिनारायण शर्मा एवं कुंजबिहारी लाल मोदी के नेतृत्व में की गई।
5. करौली – करौली प्रजामण्डल की स्थापना 1938 में की गई। प्रजामण्डल के मुख्य नेता त्रिलोकचंद माथुर थे। राजनीतिक चेतना प्रमुख रूप से 'करौली –राज्य सेवक संघ' के माध्यम से हुई जिसके संस्थापक त्रिलोकचंद माथुर थे।
6. बूंदी – बूंदी प्रजामण्डल की अध्यक्षता कांतिलाल ने की। प्रजामण्डल की स्थापना 1931 में की गई।
7. धौलपुर प्रजामण्डल – धौलपुर प्रजामण्डल की स्थापना 1936 में (1936) कृष्णदत्त पालीवाल के नेतृत्व में की गई।
8. जैसलमेर – जैसलमेर की प्रजामण्डल की स्थापना मीठा लाल व्यास ने 1945 की थी।
9. सिरोही प्रजामण्डल – सिरोही राज्य प्रजामण्डल की स्थापना 23 जनवरी 1939 को गोकुल भाई भट्ट ने की।
10. डूंगरपुर –डूंगरपुर प्रजामण्डल की स्थापना अगस्त, 1944 ई. में की गई। भोगीलाल पाड्या, हरिदेव जोशी, गोरी शंकर आचार्य, शिवलाल कोटडिया आदि ने मिलकर की। प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेश 1 अप्रैल 1946 में भोगीलाल पांडया की अध्यक्षता में किया गया।
11. बांसवाडा – 1943 ई. में प्रजामण्डल की स्थापना भूपेन्द्र त्रिवेदी के नेतृत्व में हुई।

12. प्रतापगढ – 1945 में चुन्नीलाल प्रभाकर और अमृतलाल के नेतृत्व में की गई।
13. कुशलगढ – 1942 में प्रजामण्डल की स्थापना अध्यक्षता की भंवरलाल निगम ने।
14. झालावाड– 1947 ई. में की गई।
15. बीकानेर प्रजा मण्डल की स्थापना 1934 में मंघाराम वैद्य ने बीकानेर में की।
16. जयपुर प्रजामण्डल की स्थापना 1931 में कर्पूरचन्द पाटनी ने
    (a) जमनालाल बजाज ने 1927 में यहां 'चरखा संघ' की स्थापना करके स्वदेशी खादी की ओर आकर्षित किया।
    (b) हीरालाल शास्त्री –हीरालाल शास्त्री ने वनस्थली में 'जीवन कुटीर की स्थापना' की। जो इस समय वर्तमान में वनस्थली विश्वविद्यालय है के संस्थापक ही हीरालाल शास्त्री थे। 1940 के जयपुर प्रजामण्डल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री बने।
17. मेवाड़–मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना 24 अप्रैल, 1938 में हुआ संस्था का नेतृत्व माणिक्य लाल वर्मा ने किया। प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन उदयपुर में हुआ 25–26 नवम्बर, 1941 में माणिक्य लाल वर्मा की अध्यक्षता में हुआ।
18. जोधपुर – जोधपुर में 1934 में मारवाड प्रजा मण्डल की स्थापना की जिसके प्रथम अध्यक्ष भॅवर लाल सर्राफ थे।
19. जयपुर प्रजामण्डल – 1931 में श्री कर्पूरचन्द पाटनी ने प्रजामण्डल की स्थापना की किन्तु आवश्यक जनसहयोग नहीं मिला। परन्तु 1936–1937 में सेठ जयनालाल बजाज की प्रेरणा और पंडित हीरलाल शास्त्री के प्रयत्नों से जयपुर राज्य प्रजा मण्डल का पुनर्गठन किया गया।
20. अर्जुन लाल सेठी – जैन शिक्षा सोसायटी की स्थापना, जैनवर्धन पाठशाला की स्थापना।
21. चैवरी लागत क्या? चैवरी की लागत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी लकडी की शादी के अवसर पर मेवाडा के ठिकाने को करके रूप में देने पडते थे।
22. तलवार बन्दी –गद्दी –नशीनी या उत्तराधिकारी बनने पर तलवार बंधाई के रूप में राणा को दी जाने वाली राशि को वह किसानों से वसूल की जाती है।
23. आर्य समाज की स्थापना – 10 अप्रैल, 1875 को बम्बई में की गई।
24. परोकारिणी सभा – की स्थापना उदयपुर में 1883 ई में स्वामी दयानंद ने, मेवाड के महाराणा सज्जनसिंह की अध्यक्षता में की गई।
25. रावगोपाल सिंह – अजमेर मेरवाडा में खखा ठिकाने के राव गोपाल सिंह थे जो आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित थे। ये राजपूतों में सुधार लाना चाहते थे। इन्होने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उत्तरी भारत में सशास्त्र क्रांति की योजना बनाई।
26. गोपाल दास – चुरू के रहने वाले थे (1882–1939) में इन्होने सामाजिक चेतना जागृत की। बीकानेर के महाराजा गंगासिह ने इन्हें बन्दी बना लिया था।
27. दामोदर दास राठी – ये व्यावर के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाज सुधाकर थे। इन्होने अनेक संस्थाओं और राजनैतिक कार्यकर्ताओं को आर्थिक सहायता दी ये तिलक के विचारों से प्रभावित थे। इन्होने पोकरण में भी स्कूल खोला। जिसे जोधपुर दरबार ने 1912 में बंद करवा दिया।
28. चेम्बर ऑफ प्रिन्सेज (नरेन्द्र मण्डल) – 1921 में स्थापित चेम्बर ऑफ प्रिन्सेज के संस्थापकों में से गंगासिंह प्रमुख थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद पेरिस में शान्ति समझौते पर हस्ताक्षर करने वालों में महाराजा गंगासिंह एक मात्र भारत के प्रतिनिधि थे।

प्रथम– ।। राजस्थान का इतिहास

अति संक्षिप्त लघु उत्तर :–

प्र01. राजस्थान के इतिहास का जनक किसको माना गया है?

उ0. कर्नल टॉड को।

प्र02. कर्नल टॉड के बारे में बताइये।

उ0. कर्नल टॉड ने एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी जिसका नाम है 'एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान'। (Annals and antiquihes of Rajasthan)

J.D.P.G. COLLEGE

कर्नल टॉड एक विदेशी था Political Ageent बनकर आये थे जिन्होने प्राचीन ग्रंथो, दानपत्रों, सिक्को ख्यातों और वंशावली संग्रह के आधार पर ऐतिहासिक ग्रन्थ की रचना की।

प्र03. 'ख्यात' साहित्य क्या है? इसका क्या महत्व है।

उ0. 'ख्यात साहित्य' से राजस्थान के इतिहास की जानकारी उपलब्ध होती है। 'ख्यात' साहित्य का लेखक अपने आश्रयदाता शासक के काल की घटनाओं के वर्णन के साथ ही उस वंश के प्रारम्भ से लेकर उस शासक के काल की घटनाओं का वर्णन भी करता है।

प्र04. राजस्थान (राजपूतानें) का अबुलफजल किसे कहा जाता है?

उ0. राजस्थान का अबुलफजल मुहणौत नैणसी को कहा जाता है।

प्र05. मुहणौत नैणसी का महत्व बताइये?

उ0. मुहणौत नैणसी ने एक महत्वपूर्ण ख्यात साहित्य की रचना की जो मुहणौत 'नैणसी री ख्यात' के नाम से जानी जाती है।

प्र06. 'मुहणौत नैणसी' किसके समकालीन थे।

उ0. मुहणौत नैणसी जसवंत सिंह मारवाड़ के शासक के समकालीन साहित्यकार थे। नैणसी ने अपनी ख्यात में जोधपुर के शासक रावसिंहा से लेकर जसवंत सिंह तक की घटनाओं का वर्णन दिया है।

प्र08 मुहणौत नैणसी का दूसरा ग्रंथ कौन-सा है।

उ0. दूसरा ग्रन्थ 'मारवाड रा परगना री विगत' है।

प्र09. राजस्थान में 'आहाड सभ्यता' को और कितने नामों में जाना जाता है।

उ0. आहड सभ्यता को 'ताम्र युगीन सभ्यता' के नाम से भी जाना जाता है। इसे बनास सभ्यता भी कहते है।

प्र0.10 'आहड़ सभ्यता' एवं 'बनास सभ्यता' के नाम से क्यो जाना जाता है?

उ0. उदयपुर आहड़ सभ्यता एवं 'बनास नदी' के आस-पास विकसित होने के कारण 'बनास सभ्यता' कहलाई।

प्र011 राजस्थान के प्रमुख आधुनिक इतिहासकारों के नाम बताइये।

उ0. नवीन इतिहासकारों में कर्नल टॉड, गोरी शंकर हीराचन्द ओझा, कवि श्यामलदास, डॉ. दशरथ शर्मा, डॉ. गोपीनाथ शर्मा का नाम उल्लेखीनय है।

प्र012.'राजप्रशास्ति' का ऐतिहासिक महत्व बताइये।

उ0. यह प्रशास्ति 1676 ई. में मेवाड़ के महाराणा राजसिंह के समय लिखी गयी। इससे पता चलता है कि राणा राजसिंह ने सिंचाई के लिये राजसंमद नामक तालाब का निर्माण करवाया जो आज भी Water Harvesting के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

प्र013. राणा कुम्भा को हमेशा किन-किन राज्यों से ज्यादा खतरा रहता था?

उ0. राणा कुम्भा को हमेशा उनके पडौसी राज्य गुजरात, मालवा एवं नागौर से रहता था। क्योंकि तीनों ही ये राज्य मुस्लिम राज्य थे।

प्र014 कुम्भा के समय कौन-कौन से प्रमुख वास्तुशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थ लिखे गये?

उ0. कुम्भा के समय राजवल्लभ, रूपमण्डन, वास्तुमण्डन आदि ग्रन्थ लिखे गये।

प्र015. कुम्भा के समय का प्रमुख वास्तुकार (शिल्पी) कौन था।

उ0. प्रमुख वास्तुकार 'मण्डन' था।

प्र016. 'वंश-भास्कर' क्या है।

उ0. 'वंश भास्कर' सूर्यमल्ल मिश्रण द्वारा रचित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ है, जो मराठों के आक्रमण की विस्तृत सूचना देता है।

प्र017 विश्व का सबसे बडा प्रसिद्ध दुर्ग कौन-सा है?

उ0. सबसे प्रसिद्ध एवं विश्व में सबसे बड़ा दुर्ग चित्तौड का है।

J.D.P.G. COLLEGE

प्र018 1817–18 में राजस्थान के अधिकांश राज्यों ने अंग्रजों के साथ सन्धियां कर ली। इसके प्रमुख कारण क्या थे?

उ0. 1817–18 में राजस्थान के नरेशों की आपसी कलह, उत्तराधिकार संघर्ष, सामतवाद, मराठों एवं पिण्डारियों के आक्रमण एवं राजपूत नरेशों के बहुविवाह से उत्पन्न समस्याओं के कारण राजस्थान के राज्यों को अंग्रेजों के साथ संधियां करनी पड़ी।

प्र019 राजपूत राज्यों से संधि करने वाला अंग्रेज अधिकारी कौन था।

उ0. अंग्रेज अधिकारी था 'मेटकाफ'

प्र020 अंग्रेजों से संधि करने वाला राजस्थान का सर्वप्रथम राज्य कौन था?

उ0. 'कोटा'

प्र021 सामन्तों से ली जाने वाली सैनिक सेवा क्या कही जाती थी।

उ0. 'चाकरी'

प्र022 'सामंत प्रथा' की कुछ विशेषताएं बताइये?

उ0. 1. राजस्थान में सामन्तों की स्थिति 'बराबर वालों' में प्रथम की थी। अतः सामन्त राजा के सेवक नहीं वरन् समानता के आधार पर समकक्ष होते थे। अधिकांश सांमत राजाओं के रक्त सम्बन्धी ही हुआ करते थे।

प्र023 'बाँह पसाव तालीम' क्या है?

उ0. 'बाँह पसाव तालीम' वह प्रक्रिया है जिसमें सामन्त को महाराजा के सम्मुख उपस्थित होना होता था। सामन्त राजा के पैरों के पास अपनी तलवार रखने या अचकन के पल्ले को छूने पर महाराजा उसके कंधों पर हाथ रख देते थे।

प्र024 ब्रिटिश आधिपत्य काल में राजस्थान में कौन कौन से सामाजिक सुधार किये गये?

उ0. राजस्थान में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये 'देश हितेषनी सभा' की स्थापना की गई। 2 जुलाई 1877 ई. में महाराजा सज्जसिंह ने 'देश हितेषनी' सभा की स्थापना की।

प्र025. 'वाल्टरकृत' हितकारिणी सभा क्या थी?

उ0. कर्नल वाल्टर जो मेवाड के Political Agent थे उनके प्रत्यत्नों से राजस्थान के सामंतों में व्याप्त बुराईयों को दूर करने के लिय अजमेर में एक सम्मेलन आयोजित किया गया। कवि श्यामलदास जो 'वीर विनोद' ग्रंथ के रचयिता थे उन्होने ने भी भाग लिया। 'वाल्टर कृत' हितकारिणी सभा में कुछ नियम बनाये गये।

प्र026 राजस्थान में मराठों के आक्रमण के प्रमुख कारण कौन–कौन से है?

उ0. 1. औरंगजेब की मृत्यु उपरांत मुगल सत्ता कमजोर हो चुकी थी।

2. नया पेशवा बाजीराव कुशल सेनानायक था। जिसके नेतृत्व में मराठे पुनः शक्तिशाली हो चुके थे।

3. शिवाजी के मृत्यु के पश्चात् मराठों ने अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए राजस्थान में धन प्राप्ति के लालसा के कारण आंक्रमण किया।

4. मराठों का आंतरिक इच्छा थी कि राजपूत यदि मराठों के साथ सहयोग दे तो मराठे और राजपूत दोनों ही उत्तर भारत में हिन्दूराज्य की पताकायें फहरायें। लेकिन जब राजपूतों ने मुगलों के साथ सहयोग किया तो सम्भवतः उन्हें अच्छा नहीं लगा।

प्र027 मराठों के आक्रमण राजस्थान में कब हुये?

उ0. मराठों के आक्रमण राजस्थान में राजा जयसिंह के समय प्रारम्भ हुये। मेवाड़ में राणा संग्रामसिंह के समय हुये।

प्र028 'हुरड़ा सम्मेलन' क्या है?

उ0. हुरड़ा सम्मेलन 17 जुलाई 1734 को सम्पन्न हुआ। मराठों के आक्रमण को रोकने के लिये जयपुर, जोधपुर, उदयपुर आदि के शासक मेवाड में हुरडा नामक स्थान पर एकत्रित हुये और एक संधि पर सामूहिक हस्ताक्षर किये गये।

J.D.P.G. COLLEGE

प्र029 हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता किसने की ?

उ0. राणा जगतसिंह नें।

प्र030 'एकीकृत राजस्थान' का निर्माण कार्य कब पूरा हुआ ?

उ0. 1956 में जब सम्पूर्ण सिरोही राजस्थान में मिला दिया और अजमेर मेरवाड़ा भी।

प्र031 कृषक आंदोलन सर्वप्रथम कहां प्रारम्भ हुआ।

उ0. बिजोलिया (मेवाड़)

प्र032 किसान आंदोलन के साथ किसका नाम जुड़ा है ?

उ0 'विजय सिंह पार्थिक का।

प्र033 1920 में मारवाड़ सेवा संघ का गठन किया गया जिसके नेता कौन थे ?

उ0. जयनारायण व्यास

प्र034 'रियासती सचिवालय' की स्थापना कब और किसकी अध्यक्षता में की गई ?

उ0. 'रियासती सचिवालय' की स्थापना 5 जुलाई 1947 को, सरदार वल्लभभाई पटेल की अध्यक्षता में की गई।

प्र035 'मत्स्य संघ' का निर्माण कब हुआ इनमें कौन–कौन से राज्य सम्मिलित थे ?

उ0. मत्स्य संघ का निर्माण 25 मार्च,1948 को हुआ। अलवर, धौलपुर, करौली, और भरतपुर राज्य थे।

प्र036 राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन और राजस्थान के एकीकरण में प्रमुख भूमिका किसने अदा की।

उ0. प्रजामण्डलों ने

प्र037. 19वीं संदी में राजस्थान में नमक उत्पादन का प्रमुख केन्द्र कौन सा था।

उ0. सांभर झील

प्र038. देश हितेषनी सभा की स्थापना कहां की गई।

उ0. उदयपुर।

संक्षिप्त प्रश्न – हल कीजिये (महत्वपूर्ण)

1. 'ख्यात' साहित्य से आप क्या समझते है। कोई दो प्रमुख ख्यात के नाम बताइये ?
2. नैणसी कौन थे ?
3. नैणसी को राजस्थान का अबुलफजल कहा जाता है क्यो ?
4. कर्नल टॉड के बारे में बताइये।
5. राजस्थान के प्रमुख इतिहासकारों के नाम बताइये ?
6. 'वंश भास्कर' एवं 'वीरविनोद' के रचयियता कौन थे ?
7. 'कान्हड़देव प्रबन्ध' के रचयिता कौन थे। यह किस भाषा में लिखी गई।
8. बिजौलिया शिलालेख का महत्व बताइये ?
9. 'राजप्रशस्ति' किसके द्वारा लिखी गई इसके रचयिता कौन थे ? इस प्रशास्त के महत्व पर प्रकाश डालिये ?
10. कीर्तिस्तम्भ प्रशास्ति एवं रणकपुर प्रशस्ति के बारे में बताइये।
11. 'ताम्र युगीन' सभ्यता कहाँ की थी।
12. 'धूलकोट' सभ्यता किससे सम्बन्धित है।
13. 'गणेश्वर' सभ्यता ताम्रयुगीन है अथवा लौहयुगीन
14. आहाड़ के उत्खनन् का कार्य किस पुरातत्ववेत्ता के नेतृत्व में लिया गया ?
15. 'कालीबंगा' का क्या अर्थ है। (शब्दिक)
16. कालीबंगा की खोज कब और किसके नेतृत्व में की गई (अमलानंद घोष)। राजस्थान का यह ऐतिहासिक स्थान किस जिले में और किस नदी के तट पर है। (1952)
17. विराट किस जनपद से संबंधित है। इसमें किस सभ्यता के अवशेष मिलते है और किस पहाडी से प्राप्त हुये हैं ?
18. 'पंचमार्क' चौवी की मुद्रायें कहां से प्राप्त हुई है। इसमें विश्व यूनानी राजा का संबंध है ?

1. नागल – (बीकानेर), मरूकान्तार (मारवाड़)

2. गणेश्वर – 1977 ई में सीकर जिले के काटली नदी के उद्गम स्थान पर गणेश्वर टीले की खुदाई में ताम्रयुगीन सभ्यता है। इसका उत्खन्न कार्य –राजस्थान के पुरातत्व

विभा के डॉ. R.C अग्रवाल और विजयकुमार के निर्देशन में हआ। ये सभ्यता हडप्पा व मोहनजोदडों की समकालीन सभ्यता थी।

3. नोह – भरतपुर में, जोधपुरा (जयपुर) में।

सुनारी (झुन्झुनु में), विराट नगर (जयपुर में)

रामायण में – पुष्कर का उल्लेख मिलता है।

महाभारत में – विराट नगर था।

4. अलवर, भरतपुर, जयपुर उस समय मत्स्य राज्य के भाग थे और विराट नगर उस राज्य का राजधानी था।

5. बापा रावल – मेवाड में गुहिल वंश की स्थापना गुहादित्य ने 565 में की थी। वह गुजरात के आनन्दपुर (बडनगर) से आया था। उस समय मेवाड में भीलों, ग्रासियों और मीणों के जनपद थे। इस वंश की आठवीं पीढी में बापा रावल हुये। यह महान प्रतापी नरेश थे जिसके नेतृत्व में मेवाड का उत्थान हुआ।

6. बागड राज्य – उदयसिंह की मृत्यु के बाद बागड के दो राज्य थे – 1. डूंगरपुर, 2. बांसवाडा, 3. प्रतापगढ (देवलिया) 1561 में इसकी स्थापना मेवाड घराने के रावल बीका ने की थी, 4. शाहपुरा का – यह मेवाड के उत्तर में स्थित है।

7. सिसौदिया वंशीय नरेशों के अन्य राज्य – मेवाड के गुहिल चार सरदारों ने अपने–अपने अलग–अलग राज्य स्थापित किये। 1. मेवाड के राव समरसिंह ने मेवाड के दक्षिण में 1177 में बागड राज्य की स्थापना की।

1527 में उदयसिंह की मृत्यु उपरांत बागड के दो राज्य बन गये – 1. डूंगरपुर, 2. बांसवाडा, 3. प्रतापगढ (देवलिया) का था। इसकी स्थापना 1561 में मेवाड घराने के रावल बीका ने की। 4. शाहपुरा का –मेवाड के उत्तर में है।

मारवाड – प्राचीनकाल में मारवाड के दो प्रतिहार राज्य थे। 1. मंडौर 2. भीनमाल

1. मंडौर की स्थापना छठी सदी में हरिशचन्द्र ने की थी उसके वंशज नरमाल ने मेड़ता (625–650) मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

2. भीनमाल –739 में मारवाड के क्षत्रिय प्रतिहारों ने चांवडो को परास्त कर भीनमाल की स्थापना की। नागभट्ट ने इसको अपनी राजधानी बनाया।

बीकानेर – इस राज्य की स्थापना जोधपुर नरेश जोधा के पुत्र बीका ने की थी। बीका ने 1488 में अपने नाम पर बीकानेर रखा।

किशनगढ– यह राठौडी राज्य है। स्थापना 1609 में जोधपुर नरेश उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने की।

हाडौती प्रदेश – वर्तमान समय में कोटा –बूंदी, झालावाड संयुक्त रूप से हाडौती कहलाते हैं।

भरतपुर – राज्य का संस्थापक जाट बदनसिंह था। बाद में उसका पुत्र सूरजमल भरतपुर का उल्लेखीय राजा हुआ।

कनिंघम – भारतीय पुरातत्व इतिहास में कनिघंम को भारतीय पुरात्व का जनक माना जाता है।

प्रिसेप – अशोक के लेखों को पढने वाला पुरात्ववता था।

रायल एशियाटीक सोसायटी – विलियम जोन्स ने पुरातत्व विभाग में रूचि लेने के कारण, नवीन दिशा देने के उद्देश्य से 15 जनवरी, 1784 को गई।

कालीबंगा – इस सभ्यता की खोज 1947 में गई। उत्खनन कार्य 1952 में, अमलानन्द घोष के नेतृत्व में की गई। यह नगर सूखी घग्घर (प्राचीन सरस्वती) नदी के पट पर गंगानगर जिले में है।

जुते हुये खेत (जालक) के रूप में कालीबंगा में मिले हैं।

आहड– उदयपुर से 3 किलोमीटर दूरी पर आहड नदी के बाये तट पर है। इसे बनास –सभ्यता भी कहते है। 1954–1955 में इसका उत्खनन कार्य शुरू हुआ। इसे 'ताम्र–युगीन' सभ्यता भी कहते हैं – ये आ.सी. अग्रवाल के नेतृत्व में की गई।

J.D.P.G. COLLEGE

आहड़ को धूलकोट के नाम से भी जाना जाता था। मेवाड़ के इस प्रदेश को 'मेद पाटक' भी कहा जाता है। धूलकोट का अर्थ है – धूल का टीला।

बैराट – बैराट का उत्खनन कार्य, 1987 में प्रारम्भ हुआ। यहां के उत्खनन कार्य में पूर्व पाषाणकाल से लेकर उत्तर–पाषाण काल तक के अवशेष प्राप्त हुये है। 'वैराट' नगर 'मत्स्य' राज्य का ही एक भाग था। मत्स्य जनपद की राजधानी थी– मत्स्य राज्य का संस्थापक मत्स्यक था। यहां मछली उद्योग अधिक विकसित वैराट राज्य के झंडे का प्रतीक भी 'मछली' था। पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास का एक वर्ष यहीं व्यतीत किया।

बैराट नगर जयपुर नगर से 52 मील दूर पर जयपुर –अलवर मार्ग पर है। वैराट चारों ओर पहाडियों के अलावा, रेतीले टीलों से आवृत है। उन टीलों में बीजक की पहाडी और भीमजी की डूंगरी प्रसिद्ध है। यहां तांबे के उपकरण अधिक मात्रा में उपलब्ध हुये है। ताम्रयुगीन सभ्यता का प्रसिद्ध केन्द्र है।

वैराट के उत्तर में 18 किलोमीटर की दूरी पर जोधपुर स्थित है। वहां से लौह निर्मित कुलहाडी, चाकू, छुरे, लोहा गलाने की भट्टी भी मिली है। अतः यहा 'लोहा–युगीन' सभ्यता भी फलीफूत हुई।

वैराट में मौर्यकालीन सभ्यता का भी प्रमुख केन्द्र था। प्राकृतिक गुफाओं, शैलाश्रय, पर्वत मालाओं के कारण बौद्ध भिक्षु गणों का आश्रय स्थल और बौह संस्कृति का भी केन्द्र रहा है। यह शैल प्रस्तर कालीन सभ्यता का भी केन्द्र रहा।

यहां पूर्व पाषाणकालीन एक कुल्हाडी वैराट से 8 किलोमीटर की दूरी पर ढिगरिया में तात्कालीन प्रस्तर के शस्त्र बनाने की कारखाने की संभावना की जाती है।

बीजक की पहाडियों में कैप्टन बार्ट ने पहाडी पर झूलनी गुफा देखी।

ताम्रकालीन सभ्यता के केन्द्र जोधपुर में महा भारत कालीन 58 ताम्र के उपकरण – भाले, बरछे, चूडिया, अंगूठीख छडे मछली पकडने के कांटे मिले हैं। जोधपुर में स्थित 60 ताम्र कुल्हाडियां भी प्राप्त हुई हैं।

वैराट – अनेक सभ्यताओं का केन्द्र स्थल –

1. महाभारत कालीन सभ्यता –महाभारत के उद्योग पर्व –विराट पर्व में विराट नगर को समृद्ध नगर बताभाहि। महाभारत कालीन – लोहे की कुल्हाडिया, भाले, मृदमाण्ड, बावडिया मिली है।
2. मार्यकालीन सभ्यता का केन्द्र – 1837 में केप्टिन बार्ट ने अशोक के प्रथम अभिलेख का पता चलाया। बीजक की पहाडी, भीमसेन की पहाडी पर अनेक मौर्यकालीन अवशेष मिले हैं बौद्ध बिहार (गोल मन्दिर) का निर्माण अशोक कालीन था। जयपुर नरेश रामसिंह के समय इस गोल मंदिर की खुदाई की गई। इस खुदाई में स्वर्ण की पेटी, बुद्ध की प्रतिमा मिली है।

   विराट नगर में मध्यकाल के अवशेषों के रूप ईदगाह, टकसाल के खण्डर भी उपलब्ध हुये हैं। अतः स्पष्ट है कि मुगल काल तक आते–आते बैराट व्यापारिक केन्द्र बन चुका था। 28 पंचमार्क की मुद्राये भी यहां उपलब्ध हुई। इस बात का प्रमाण है कि यूनानी व्यापारी भी यहां व्यापार करते थे। बीजक पहाडी पर सूत्री वस्त्र के साथ कुछ चांदी के सिक्के भी मिले हैं।

   अशोक स्तम्भ – बीजक की पहाडी पर अशोक स्तम्भ के कई टुकडे मिले हैं अशोक के स्तम्भों के अवशेषों में सिंह आकृति के पाषाण –खण्ड भी मिले हैं।

   गोल मन्दिर – गोल मंदिर के अवशेष मिले हैं जो बौद्ध मठों के पास हैं। इसका निर्माता अशोक ही माना जाता है। यह मठ हीनयान सम्प्रदाय के हैं।

   बैराट का तत्कालीन धर्म प्राप्त अशोक कालीन स्तम्भ से प्रतीत होता है कि राजस्थान कई भागों में बहि धर्म फलीभूत हुआ जैसे –बैराट, शेरगढ, नगरी।

   बैराट सभ्यता पर यूनानी प्रभाव – बैराट में टकसाल के अवशेष भी मिले है। टकसाल में पंचमार्क सिक्के तैयार किये जाते थे। बैराठ उस समय व्यापार का केन्द्र था। यूनानी व्यापारी भी यहां आकार व्यापार

[J.D.PG. COLLEGE]

करते थे। प्राप्त 36 मुद्रायें 8 पंच मार्क मुद्राएं सूती वस्त्र में बंधी मिली है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. गुहिकों की शाखाओं मुहणौत नैणसी ने 24 और कर्नल टॉड ने भी 24 शाखाओं का उल्लेख किया है जिसमें कुछ निम्न है :–
   कल्याणपुर के गुहिल, बागड के, चाटसू के, मारवाड के, काठियावाड के और मेवाड के।
   घोडे के गुहिल – घोडे स्थान जहाजपुर के समीप है।
2. 'हम्मीर मर्द नाटक' – जयसिंह सूरी का इस नाटक से जैत्रसिंह की उपब्धियों पर प्रकाश पडता है।
3. जालौर के चौहान सोनगरा चौहान कहलाते है। सोनगढ दुर्ग जालौर के दुर्ग का है। कीर्तिपाल ने 'सोनगरा' 'चौहान वंश' की स्थापना की जो जालौर में है।
4. रणथम्भौर शाखा के चौहानों का प्रवर्तन पृथ्वीराज तृतीय के पुत्र गोविन्दराज को माना है।
5. राजस्थान का कौनसा किला 'सोनार किला' कहलाता है ?
   उत्तर – जैसलमेर का।

J.D.P.G. COLLEGE